आधुनिक पाश्चात्य दर्शन

डॉ0 वीना शर्मा

Scanned with CamScanner

सत्ता अनुभवमूलक है (Essest Percipi)

अमूर्त प्रत्ययों एवं जड़ तत्वों का खण्डन करने के पश्चात् बर्कले के सम्मुख ज्ञान की प्रक्रिया के विवेचना की समस्या उत्पन्न होती है। क्योंकि बर्कले ने लॉक द्वारा गुणों में किए गए भेद को असंगत ठहरा दिया था। इसलिए उनके सम्मुख केवल एक ही विकल्प शेष रहता है कि ज्ञाता अथवा आत्मा, प्रत्ययों का ही प्रत्यक्ष करती है और प्रत्ययों की सत्ता किसी आत्मा अथवा ज्ञाता के संदर्भ में ही सार्थक होती है, इसी बात को एक सूत्र के रूप में बर्कले ने प्रस्तुत किया है–'सत्ता अनुभवमूलक है।' यह बर्कले का महावाक्य है बर्कले के इस सूत्र का निहितार्थ ये है कि किसी प्रत्यय की अथवा किसी वस्तु की सत्ता उसकी दृश्यता में निहित है। इसे संस्कृत के–'यत-दृश्यम् तत् सत्'' से भी व्यक्त किया जा सकता है, दूसरे शब्दों में प्रत्यक्षीकरण के अभाव में कोई भी सत्ता हमारे लिए

बोधगम्य नहीं हो सकती है। इन दोनों ही अर्थों से भौतिकवादी मान्यताएँ खण्डित होती हैं तथा प्रत्ययवाद (Idealism) की पुष्टि होती है–'सत्ता अनुभवमूलक है'। महावाक्य का पहला अर्थ है कि उसी वस्तु की सत्ता है जो अनुभवमूलक है। जैसे 'प्रत्यक्ष' किसी प्रत्यक्षकर्त्ता का प्रत्यक्ष है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि ज्ञाता या आत्मा की सत्ता बर्कले का सुविचारक तर्क है। इसका दूसरा पक्ष यह भी है कि ज्ञाता अथवा आत्मा एक प्रत्यक्ष करने वाली सत्ता है। यानि वस्तुओं की सत्ता उसके प्रत्यक्षीकरण में है। इस दृष्टि से आत्माएँ एवं ईश्वर, 'सत्ता' की श्रेणी में आते हैं। इसकी व्याख्या अन्य प्रकार से की जा सकती है। जैसा ज्ञाता और ज्ञेय के द्वैत के आधार पर यह व्याख्या प्रस्तुत की गयी है। संपूर्ण प्रकृति में केवल दो सार्थक सत्ताएँ हैं। इसके अतिरिक्त कोई सत्ता है तो वह काल्पनिक है। जो ज्ञेय है वही सत् है। ज्ञेय विषय केवल विज्ञान (Idea) है, विज्ञान ही सत् है वस्तु नहीं। ज्ञेय के लिए ज्ञाता की अपेक्षा है। ज्ञाता आत्मा है और ज्ञेय विज्ञान है। इनके अतिरिक्त किसी की सत्ता नहीं है। दोनों सत्ताओं ज्ञाता एवं ज्ञेय में तादात्म्य-सम्बन्ध है। 'सत्ता अनुभवमूलक' वाक्य का दूसरा अर्थ यह भी है कि–'सत्ता केवल उसी की है जिसका हमें अनुभव होता है, जो अनुभव का विषय नहीं है उसकी सत्ता नहीं है। बर्कले का मत शंकराचार्य से भिन्न है क्योंकि शंकराचार्य का मत है कि जो दृश्य है वह मिथ्या है। जबकि बर्कले का विचार है कि 'उसी की सत्ता है जो दृश्य है।'

अब बर्कले के सम्मुख ये प्रश्न उपस्थित होता है कि अनुभव का विषय या ज्ञेय विषय क्या है? इसके प्रत्युत्तर में बर्कले कहते हैं कि जड़तत्व का ज्ञेय विषय होना असंभव है, जड़तत्व बाह्य रूप से अपना अस्तित्व नहीं रखता है। इसलिए केवल प्रत्यय या संवेदन और स्वसंवेदन ही हमारे ज्ञान का विषय बन सकती है। संवेदनों की सृष्टि ईश्वर करते हैं, और स्वसंवेदनों की सृष्टि आत्मा करती है। यही बात लाइबनित्ज ने कहा था कि 'चिद्‌णु एवं उनके प्रतिबिम्बों के अतिरिक्त संसार में किसी अन्य वस्तु की सत्ता नहीं है। बर्कले ने कहा–'आत्मा और उसके विज्ञानों के अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु की सत्ता नहीं है।'

इस प्रकार बर्कले यह स्थापित करते हैं कि प्रत्यक्ष करने वाली वस्तु और प्रत्यक्षीकृत होने वाली वस्तु का ही अस्तित्व है। चूंकि प्रत्यक्षीकृत होने वाली वस्तुएँ स्वभावतः किसी आत्मा पर निर्भर हैं यदि सीमित आत्मा पर नहीं तो निश्चित रूप से असीम ईश्वर पर निर्भर हैं। 'सत्ता अनुभवमूलक है' इस सूत्र के दोनों अर्थों की व्याख्या से स्पष्ट है कि आत्मा से स्वतंत्र किसी भी वस्तु का अस्तित्व नहीं है। इस मान्यता को स्वीकार करके बर्कले स्पष्ट रूप से विज्ञानवाद की स्थापना करते हैं। बर्कले विज्ञानवाद या प्रत्ययवाद (Idealism) की स्थापना के लिए वस्तुवाद का खंडन करते हैं। 'वस्तुवाद वह सिद्धान्त है जो सृष्टि के मूल में स्वतंत्र जड़ पदार्थ की सत्ता स्वीकार करता है। जब कि प्रत्ययवाद केवल चेतना को स्वतंत्र सत्ता के रूप में स्वीकार करता है। दोनों में यही मूलभूत अन्तर है, वस्तुवादी यह तर्क देते हैं कि यदि बाह्य जगत में स्वतंत्र वस्तुएँ न होती तो हमें देश-काल के नियमों के अनुसार उनका प्रत्यक्ष कैसे होता? बर्कले इस बात का खण्डन करते हुए कहते हैं–"स्वप्न में भी देश-काल के नियम उसी प्रकार लागू होते हैं जैसे जाग्रतावस्था में, बाह्य-जगत की बात करें तो हम देखते हैं कि स्वप्न में बाह्य पदार्थ

Scanned with CamScanner

स्वतंत्र नहीं होते हैं; उनकी रचना मन के द्वारा की जाती है। बर्कले का यह विचार हमें भारतीय दर्शन में बौद्ध विज्ञानवादियों या योगाचार विज्ञानवादियों की याद दिलाता है। लेकिन अन्तर यह है कि बौद्ध विज्ञानवादी विज्ञानों के प्रत्यक्ष के अधिष्ठान के रूप में आत्मा जैसी किसी सत्ता को स्वीकार नहीं करते जब कि आत्मा की सत्ता बर्कले की ज्ञानमीमांसा का अपरिहार्य अंग है। बर्कले विज्ञानवाद की स्थापना करते हुए कहते हैं कि 'यदि कोई सत्तावान वस्तु है तो इसका तात्पर्य यह है कि चेतना में उसका प्रत्यक्ष हो रहा है। अचेतन वस्तुओं के निरपेक्ष अस्तित्व की बात करना जो किसी के द्वारा प्रत्यक्षीकृत नहीं है, हमारे लिए बिल्कुल बोधगम्य नहीं है, उनका अस्तित्व उनके प्रत्यक्षीकृत होने में ही है।''[1] प्रत्ययवाद की व्याख्या करते हुए बर्कले का कथन है कि "वह मेज जिस पर मैं लिखता हूँ, मैं कहता हूँ कि उसका अस्तित्व है, क्योंकि मैं उसे देखता हूँ और अनुभव करता हूँ। यदि मैं अपने अध्ययन कक्ष से बाहर चला जाऊँ तो कहूँगा कि उसका अस्तित्व था। तात्पर्य यह है कि यदि मैं वहाँ होता तो उसका प्रत्यक्ष करता, अथवा यह कि कोई अन्य आत्मा वास्तव में उसका प्रत्यक्ष करती है। वहाँ एक गंध थी अर्थात् सूंघी गयी थी, वहाँ एक ध्वनि थी अर्थात् सुनी गयी थी, एक रंग था आकृति थी और वह आँख या त्वचा द्वारा प्रत्यक्षीकृत हुई थी, यही सब कुछ है जिसे मैं ऐसी अभिव्यक्तियों से समझता हूँ क्योंकि अचेतन वस्तुओं की निरपेक्ष सत्ता के बारे में जिनका प्रत्यक्षीकृत होने से कोई सम्बन्ध नहीं है पूर्णतः अबोधगम्य है। उनकी सत्ता प्रत्यक्षीकृत होने में है।"[2] किन्तु कुछ लोगों की धारणा हो सकती है कि ये मकान, पेड़, पहाड़ आदि वस्तुओं का प्रत्यक्ष न होने पर भी अस्तित्व है।

बर्कले का विचार है कि यदि इस धारणा पर ठीक ढंग से विचार किया जाए तो इसमें स्पष्ट विरोधाभास प्रतीत है। इसमें संदेह नहीं है कि कुछ सत्य अधिक स्पष्ट और निश्चित होते हैं। जिन्हें कोई व्यक्ति अपनी आखें खोलकर देख सकता है। जैसे अंतरिक्ष के सभी संगति और पृथ्वी पर सभी वस्तुएँ संक्षेप में वे सभी पदार्थ जो विश्व की रचना के घटक हैं; उनका मन से बाहर अस्तित्व नहीं है। उनकी सत्ता प्रत्यक्षीकृत अथवा ज्ञेय होने में है।[3]

बर्कले के उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि प्रत्यक्षकर्त्ता एवं प्रत्यक्षीकृत वस्तुओं की ही सत्ता है। हमारे मन में उन वस्तुओं के प्रत्यय विद्यमान हैं। ये प्रत्यय यथार्थ भी हैं और छाया रूप भी हैं। 'मानवीय ज्ञान के सिद्धान्त' में हाइलस (Hylas) प्रश्न करता है कि

Scanned with CamScanner

"सभी संभव मनों से स्वतंत्र या स्वतः स्थित वृक्ष या गृह के प्रत्यय करने से सरल और क्या हो सकता है? इस प्रकार मैं स्वयं इस समय उनका प्रत्यय कर रहा हूँ।"

फिलोनस (Philonous) उत्तर देते हुए कहता है कि "जिस वृक्ष या गृह को आप सोचते हैं उसका आपने प्रत्यय किया है और जिसका प्रत्यय होता है, वह मन में है, तब आपने कैसे कहा कि आपने सभी संभव मनों से स्वतंत्र और बाहर स्थित किसी वस्तु का प्रत्यय किया है।"

हाइलस कहता है कि "मैं मानता हूँ एक दृष्टि भूल हो गयी ।" बर्कले भी कहते हैं कि वे सभी पदार्थ जो विश्व की रचना के घटक हैं, उनका मन से बाहर अस्तित्व नहीं है। हाइलस का कहना है कि "वास्तविक अग्नि में और अग्नि के प्रत्यय में महान अंतर है।"

फिलोनस उत्तर देते हैं कि "यदि आप संदेह करते हैं कि आप जो देखते हैं वह अग्नि का मात्र प्रत्यय है तो अपना हाथ उस पर रखिए, आप इस साक्ष्य से संतुष्ट हो जाएंगे। पुनः फिलोनस कहता है कि "यदि वास्तविक अग्नि, अग्नि के प्रत्यय से भिन्न है तो वास्तविक वेदना जिसे यह उत्पन्न करती है, उस वेदना के प्रत्यय से भिन्न है। किन्तु कोई यह नहीं कहेगा कि वास्तविक वेदना अचित वस्तु के मन में या अपने प्रत्यय के अतिरिक्त कुछ है या संभवतः हो सकती है।[1]

बर्कले के अनुसार इन्द्रिय-प्रत्यक्ष से बनने वाले प्रत्यय यथार्थ वस्तु है क्योंकि इनका कर्त्ता ईश्वर है। उसे संवेदन-प्रत्यय कहा जाता है। संवेदन-प्रत्ययों के संघात को वस्तु-प्रत्यय कहते हैं। उदाहरणार्थ आम एक प्रत्यय है, लेकिन इसका रस, वर्ण आकार इत्यादि संवेद-प्रत्यय है। इन संवेद प्रत्ययों पर बर्कले का 'यत् सत् तद् दृश्यम् ' का सिद्धान्त पूर्णतया सटीक बैठता है। वस्तु-प्रत्यय के ज्ञान में सभी प्रत्ययों का ज्ञान एक साथ नहीं होता है। 'सत्यं दृश्यम्' किसी वस्तु के अस्तित्व का केवल एक पक्ष है। दूसरा पक्ष उत्पत्ति से सम्बन्धित है। कुछ प्रत्यय ऐसे हैं जो दृश्य या संवेद्य होने के साथ-साथ हम उन्हें उत्पन्न भी करते हैं। जैसे–कल्पना, स्वप्न इत्यादि। इसके विपरीत हमारे कुछ प्रत्यय तो ऐसे होते हैं जो दृश्य या संवेद्य होते हैं किन्तु उन्हें हम उत्पन्न नहीं कर सकते हैं। प्रश्न है कि इन इन्द्रिय-प्रदत्तों की उत्पत्ति कैसी होती है? बर्कले कहता है कि उनकी उत्पत्ति ईश्वर करता है। ईश्वर उनकी उत्पत्ति का कारण है। जिस प्रकार कल्पनाएँ एवं स्वप्न अपनी दृश्यता और अस्तित्व के लिए जीवात्माओं पर आश्रित होते हैं, उसी प्रकार संवेद्य-प्रत्ययों की दृश्यता और अस्तित्व ईश्वर पर आश्रित है। सत्यं दृश्यं, संवेद्य प्रत्ययों का अनिवार्य कारण तो है पर पर्याप्त कारण नहीं है। उनका पर्याप्त कारण ईश्वर द्वारा उत्पन्न होना है। बर्कले बार-बार इस बात पर बल देते हैं कि मन से बाहर, प्रत्यक्ष की परिधि से बाहर वस्तुओं की सत्ता नहीं है। इन्द्रियों के द्वारा ज्ञेय न होने पर जड़-तत्त्व को बुद्धि द्वारा ज्ञेय होना चाहिए किन्तु बुद्धि जड़तत्त्व और हमारे प्रत्ययों के बीच किसी अनिवार्य-सम्बन्ध की पुष्टि नहीं करती है। बर्कले का कथन है कि "मैं कहता हूँ यह संभव है कि हम अपने सभी वर्तमान के प्रत्ययों से प्रभावित हो जाएं, जबकि उनके

Scanned with CamScanner

सदृश्य कोई वस्तु न हो, अतः प्रत्ययों की उत्पत्ति के लिए बाह्य वस्तुओं की स्वीकृति अनिवार्य नहीं है। इस प्रकार जड़तत्त्व दृश्यमान वस्तु न होने के कारण इन्द्रियों और बुद्धि दोनों के द्वारा ज्ञेय नहीं है। इसलिए जड़तत्व की सत्ता काल्पनिक एवं व्यर्थ है।

इसी संदर्भ में एक संदेह यह उत्पन्न होता है कि जब हम वस्तुओं का प्रत्यक्ष नहीं करते हैं तब क्या वे गायब हो जाती हैं? यदि सृष्टि ही दृष्टि है तब वस्तुओं के दृष्ट को न रहने पर सृष्टि को नहीं रहना चाहिए। तात्पर्य यह है कि जब तक सृष्टि का प्रत्यक्ष होता है तभी तक उसका अस्तित्व है, जब हम वस्तुओं को नहीं देखते हैं तब उनका अस्तित्व गायब हो जाता है। इन बातों से ऐसा प्रतीत होता है कि बर्कले 'अहंवादी-सिद्धान्त' की स्थापना कर रहे हैं। बर्कले इन बातों को निराधार बताते हुए कहते हैं कि 'वस्तु के अनुभवमूलक होने का तात्पर्य यह नहीं है कि केवल मेरे द्वारा दृष्टिगोचर हो, विश्व में और आत्माएँ भी हैं जो शान्त एवं नश्वर आत्माएँ हैं। ये आत्माएँ मेरे न देखने पर भी तथाकथित वस्तु को देखती हैं। अपनी आत्मा के अस्तित्व का ज्ञान आत्मबोध से होता है। हमारे ज्ञान में जो भी आता है वह आत्म-बोध एवं संवेदनों से ही आता है। इसका कारण क्या है? इसका कारण जड़ जगत नहीं हो सकता है क्योंकि जड़-जगत का अस्तित्व ही नहीं है। इसका कारण चैतन्य एवं क्रियाशील, द्रव्य को होना चाहिए जो अभौतिक होने के साथ-साथ आध्यात्मिक भी हो। इससे आत्मा का अस्तित्व सिद्ध होता है। ससीम आत्माओं का अस्तित्व अनुमान से प्रमाणित होता है। अन्य आत्माओं को अपने समान कार्य करता हुआ देखकर तथा उन्हें भाषा एवं सकेतों के द्वारा हमारे विचारों को समझते हुए देखकर अनुमान करते हैं कि 'मेरी ही तरह अन्य आत्माएँ भी हैं। पुनः यह प्रश्न उठता है कि क्या प्रत्येक वस्तु को कोई न कोई चेतन आत्मा देखे, यह संभव है। उत्तर में बर्कले कहते हैं कि जहाँ कोई शांत आत्मा एवं दर्शक नहीं हैं वहाँ अनन्त आत्मा अर्थात् ईश्वर सबसे बड़ा दर्शक है। वह सम्पूर्ण सृष्टि को देखता है। यही परमात्मा संपूर्ण प्रत्ययों का कारण है। यही मन में विभिन्न प्रत्ययों को उत्पन्न करता है। अतः संपूर्ण जगत ईश्वरीय मनस में स्थित होने के कारण चेतन स्वरूप है। जड़ता कहीं नहीं है। यहाँ बर्कले का विचार स्पिनोजा के सदृश्य है। स्पिनोजा के सर्वेश्वरवाद में आस्तिकता की पराकाष्ठा देखने को मिलती है।

वस्तुवाद का खण्डन

वस्तुवादी वस्तु की सत्ता को आत्मा से बिल्कुल स्वतंत्र मानता है। वस्तुवाद, जड़वाद का समर्थन करता है जो वस्तुओं को अपने से बाहर कुछ दूरी पर देखते हैं। बर्कले के अनुसार ऐसी बात नहीं है कि वस्तुएँ (Things) मन से बिल्कुल स्वतंत्र न होकर मन पर आश्रित होती है। जब हम स्वप्नावस्था में होते हैं तो वस्तुओं को बड़ी दूरी पर स्थित देखते हैं। उन वस्तुओं का भी अस्तित्व केवल मन में होता है। बर्कले कहते हैं-"मैं कहता हूँ कि इसे सभी लोग स्वीकार करते हैं कि हम उन विज्ञानों द्वारा भी प्रभावित हो सकते हैं जिनके सदृश्य बाह्य जगत में कोई वस्तुएँ विद्यमान नहीं हैं। स्वप्न, उन्माद इत्यादि घटनाएँ इस बात को निर्विवाद सिद्ध करती हैं। अतः बाह्य वस्तुओं को मानना हमारे प्रत्ययों की उत्पति के लिए आवश्यक नहीं है क्योंकि यह स्वीकार किया जाता है

Scanned with CamScanner